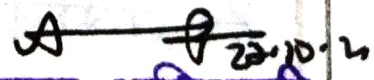


वर्तमान राजस्व कानून आने से पूर्व से साखिब ख न. 811 रकबा 26-05 बीघा में से 5 बीघा भूमि पर काबिज काश्त है। सेटलमेन्ट 1920-21 में साखिब ख न. 811 मित्र रकबा 05-00 बीघा में से नवीन ख न. 999 रकबा 04-00 बीघा पर प्रार्थीगण के पिता व पति को खातेदारी अधिकार दिये थे। लेकिन वर्ष 1989 की चौसाला जमाबंदी में अंतिम चौसाला के आधार पर उक्त भूमि को पुनः सिवायचक्र दर्ज कर दी जबकि उक्त आराजी पर आर्डिनॉर तब प्रार्थीगण का कब्जा-काश्त है। वकील प्रार्थीगण ने बताया कि साखिब ख न. 811 के नवीन ख न. 997, 999, 1000 व 1001 बने जिसमें से ख न. 997 व 1001 का आर्वलन शैतान व रामसिंह को हो चुका है जबकि ख न. 999 रकबा 04 बीघा पर प्रार्थीगण का कब्जा व आधिपत्य है जिसे गलत तरीके से सिवायचक्र दर्ज कर दिया गया है। अतः प्रार्थीगण को अणर्षी के विरुद्ध अस्थायी निवेद्यद्वारा जारी करवाने हेतु वकील प्रार्थीगण ने निवेदन किया। पैरोकार सरकार ने अपनी बहस में बताया कि चुंदिवास्त आराजी सिवायचक्र दर्ज कर दी गयी है अतः भूमि पर खातेदारी अधिकार नहीं दिये जा सकते हैं। चुंदि सिवायचक्र भूमि पर खातेदारी अधिकार नहीं दिये जा सकते हैं अतः प्रार्थीगण का प्रार्थना-पत्र खारिज फरमाया जावे।

हमने उभय पक्ष की बहस पर मनन किया। उभय पक्ष की बहस व पत्रावली में उपलब्ध उस्तावेजों

वै आधार पर अस्थायी निषेधाज्ञा के तीनों बिन्दु
 प्रार्थीगण के पक्ष में सिद्ध नहीं होते हैं क्योंकि प्रार्थीगण
 मौखिक पर काबिज नहीं है अतः प्रथम दृष्टया मामला
 प्रार्थीगण के पक्ष में प्रतीत नहीं होता है। चूंकि
 सिविल चर्क श्रुति में खातेदारी अधिकार प्रदान नहीं
 किये जा सकते हैं, इससे राज्य हित भी प्रभावित होता
 है अतः सुविधा का संतुलन भी प्रार्थीगण के पक्ष
 में सिद्ध नहीं होता है। अपूरणीय क्षति का बिन्दु
 भी प्रार्थीगण के पक्ष में सिद्ध नहीं होता है।

अतः उभय पक्ष की बहस एवं पत्रावली में
 उपलब्ध दस्तावेजों के आधार पर अस्थायी निषेधाज्ञा
 के तीनों बिन्दु अप्रार्थी के पक्ष में पाये जाने के
 कारण तथा प्रार्थना- पत्र अंतर्गत धारा-212
 राजस्थान काश्तकारी अधिनियम, 1955 का स्वीकार
 योग्य नहीं होने के कारण खारिज किया जाता है।
 निर्णय आज दिनांक 23.10.2021 को मेरे
 द्वारा लिखा जाकर सरे- इजलास में सुनाया गया।


 उपखण्ड अधिकारी
 पुष्कर (अजमेर)